Volume: 11, Issue: 4, October-December 2021

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

An International Open-Access Peer Reviewed Referred Journal

Impact Factor: 8.909 E-ISSN : 2249 – 4642 P-ISSN: 2454 - 4671

Contribution of Educational and Social Institutions to the Promotion and Development of Hindi in Karnataka

कर्नाटक में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में शैक्षिक एवं सामाजिक संस्थाओं का योगदान

Prateek Mali
Research Scholar, Karnatak University, Dharwad

प्रतीक माली,

शोधछात्र, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़

DOI: http://doi.org/10.37648/ijrssh.v11i04.024

Paper Received:

21st December, 2021

Paper Accepted:

26th December, 2021

Paper Received After Correction:

28th December, 2021

Paper Published:

30th December, 2021

How to cite the article: Prateek Mali, Contribution of Educational and Social Institutions to the Promotion and Development of Hindi in Karnataka, October-December 2021 Vol 11, Issue 4; 413-419 DOI: http://doi.org/10.37648/ijrssh.v11i04.024

ABSTRACT

India is a multilingual and multicultural nation where diverse languages play a significant role in strengthening national unity and cultural integration. As one of the major link languages of the country, Hindi serves as a medium of communication connecting different regions of India. Among the southern states, the history of the promotion and development of Hindi is particularly noteworthy in Karnataka, which occupies a significant place in this regard. The growth of Hindi in Karnataka is not confined to the modern period; rather, its roots can be traced to medieval Deccani literature, the Hindavi tradition, and various socio-cultural movements. Gulbarga, one of the major centers of Deccani literature, witnessed the early development of Hindi in its formative form. During the Maratha rule and the reigns of Hyder Ali and Tipu Sultan, the use of Hindi-Urdu, along with Mahatma Gandhi's National Language Movement during the Indian freedom struggle, provided new momentum to the spread of Hindi in Karnataka.

In the modern era, particularly after 1920, the Hindi propagation movement gained considerable momentum in Karnataka. The teaching of Hindi was introduced in schools and universities, while higher educational institutions such as the University of Mysore and Karnatak University provided an institutional foundation for Hindi education and research. As a result, significant scholarly work was undertaken in the fields of Hindi literature, comparative literature, translation studies, and linguistics. Hundreds of researchers from various universities in Karnataka have conducted important studies on different dimensions of Hindi.

Institutions dedicated to the promotion of Hindi have made a remarkable contribution to its development in Karnataka. Organizations such as the Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Karnataka Hindi Prachar Sabha, Mysore Hindi Prachar Parishad, Riyasat Hindi Seva Samiti, and Karnataka Mahila Hindi Seva Samiti have played a vital role in promoting Hindi through teaching programs, examinations, preparation of instructional materials, and public awareness initiatives. In particular, the Karnataka Mahila Hindi Seva Samiti has made noteworthy efforts to promote Hindi among women. Furthermore, Hindi writers and literary journals of Karnataka have significantly enriched Hindi language and literature. Publications such as *Hindi Pracharak*, *Bharatvani*, *Parishad Patrika*, *Hindi Pracharvani*, and other literary magazines have encouraged Hindi writing, translation, criticism, and research. Hindi authors from Karnataka have contributed creatively across various literary genres, thereby providing new directions to Hindi literature.

The present research paper analytically examines the historical development of Hindi in Karnataka and the contributions of Hindi promotion organizations, universities, literary figures, and journals. The study reveals that Karnataka has made significant contributions to the promotion, teaching, research, and literary creation of Hindi, while also playing an important role in strengthening national integration and linguistic harmony.

Keywords: *Karnataka; Promotion and Development of Hindi; Hindi Promotion Organizations; Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha; Hindi Literature; Literary Journals; Research.*

सारांश

भारत बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक परंपराओं वाला देश है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हिन्दी भारत की प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने का कार्य करती है। दक्षिण भारत के राज्यों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का इतिहास विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है, जिनमें कर्नाटक का स्थान महत्वपूर्ण है। कर्नाटक में हिन्दी का विकास केवल आधुनिक काल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें मध्यकालीन दक्खिनी साहित्य, हिन्दवी परंपरा तथा सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलनों में भी दिखाई देती हैं। दक्खिनी साहित्य के प्रमुख केंद्रों में से एक गुलबर्गा रहा है, जहाँ हिन्दी के प्रारंभिक स्वरूप का विकास हुआ। मराठा शासन, हैदर अली और टीपू सुल्तान के काल में हिन्दी-उर्दू के प्रयोग तथा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के राष्ट्रभाषा आंदोलन ने भी कर्नाटक में हिन्दी के प्रसार को नई दिशा प्रदान की।

आधुनिक काल में विशेषतः 1920 के बाद कर्नाटक में हिन्दी प्रचार आंदोलन को व्यापक गति प्राप्त हुई। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था प्रारंभ हुई तथा मैसूर विश्वविद्यालय और कर्नाटक विश्वविद्यालय जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों ने हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान को संस्थागत आधार प्रदान किया। इसके फलस्वरूप हिन्दी साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद अध्ययन तथा भाषा विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध कार्य संपन्न हुए। कर्नाटक के विभिन्न विश्वविद्यालयों से सैकड़ों शोधार्थियों ने हिन्दी के विविध आयामों पर महत्वपूर्ण अनुसंधान किया है। कर्नाटक में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी सेवी संस्थाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, रियासत हिन्दी सेवा समिति तथा कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति जैसी संस्थाओं ने हिन्दी शिक्षण, परीक्षा संचालन, पाठ्य सामग्री निर्माण तथा जनजागरण के माध्यम से हिन्दी को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। विशेष रूप से महिलाओं में हिन्दी जागृति लाने के उद्देश्य से स्थापित कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त कर्नाटक के हिन्दी साहित्यकारों तथा हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने भी हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'हिन्दी प्रचारक', 'भारतवाणी', 'परिषद पत्रिका', 'हिन्दी प्रचारवाणी' तथा अन्य साहित्यिक पत्रिकाओं ने हिन्दी लेखन, अनुवाद, आलोचना और शोध को प्रोत्साहित किया। कर्नाटक के हिन्दी लेखकों ने साहित्य की विविध विधाओं में सृजनात्मक योगदान देकर हिन्दी साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

प्रस्तुत शोध आलेख में कर्नाटक में हिन्दी के ऐतिहासिक विकास, हिन्दी प्रचार संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, साहित्यकारों तथा पत्र-पत्रिकाओं के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कर्नाटक ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार, शिक्षण, अनुसंधान और साहित्यिक सृजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है तथा राष्ट्रीय एकता और भाषायी समन्वय को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

IJRSSH

कुंजी शब्द: कर्नाटक, हिन्दी प्रचार-प्रसार, हिन्दी सेवी संस्थाएँ, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ, अनुसंधान

प्रस्तावना

भारत विश्व के उन देशों में अग्रणी है जहाँ भाषाई, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विविधता अत्यंत समृद्ध रूप में विद्यमान है। भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त अनेक भाषाएँ देश की सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन भाषाओं में हिन्दी का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हिन्दी न केवल भारत की सर्वाधिक प्रचलित भाषाओं में से एक है, बल्कि यह विभिन्न भाषाई समुदायों के मध्य संपर्क स्थापित करने वाली एक प्रभावी भाषा भी है। राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समन्वय तथा भावनात्मक एकात्मता के निर्माण में हिन्दी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

दक्षिण भारत के राज्यों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का इतिहास स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रभाषा आंदोलन से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का माध्यम मानते हुए दक्षिण भारत में इसके प्रचार के लिए विशेष प्रयास किए। उनके नेतृत्व में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा सहित अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई, जिन्होंने हिन्दी शिक्षण और प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य किया। कर्नाटक भी उन राज्यों में प्रमुख है जहाँ हिन्दी ने सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक स्तर पर उल्लेखनीय विकास किया है।

कर्नाटक में हिन्दी का इतिहास केवल आधुनिक काल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी जड़ें मध्यकालीन दक्खिनी साहित्य और हिन्दवी परंपरा तक पहुँचती हैं। दक्खिनी हिन्दी के विकास में गुलबर्गा, बीजापुर तथा अन्य क्षेत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मध्यकालीन संतों, कवियों और सूफी साहित्यकारों ने हिन्दी के विविध रूपों में साहित्य सृजन कर भाषा के विकास में योगदान दिया। मराठा शासन, हैदर अली तथा टीपू सुल्तान के काल में भी हिन्दी-उर्दू के प्रयोग और संपर्क ने भाषा के प्रसार को बल प्रदान किया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अनेक कर्नाटकवासियों ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार को राष्ट्रीय सेवा का माध्यम माना और इसके प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाई।

आधुनिक युग में विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से कर्नाटक में हिन्दी शिक्षा और हिन्दी प्रचार आंदोलनों को व्यापक गति प्राप्त हुई। विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन की व्यवस्था स्थापित हुई। मैसूर विश्वविद्यालय और कर्नाटक विश्वविद्यालय जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन-अध्यापन तथा अनुसंधान को प्रोत्साहन प्रदान किया। इसके परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, अनुवाद अध्ययन और भाषा

विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध कार्य सम्पन्न हुए।

कर्नाटक में हिन्दी के विकास में हिन्दी प्रचार संस्थाओं, साहित्यकारों, शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा पत्र-पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। इन प्रयासों ने हिन्दी को केवल एक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकात्मता, सांस्कृतिक संवाद और ज्ञान-विनिमय के प्रभावी माध्यम के रूप में स्थापित किया है। प्रस्तुत शोध आलेख में कर्नाटक में हिन्दी के ऐतिहासिक विकास, हिन्दी प्रचार संस्थाओं, शैक्षिक योगदान तथा साहित्यिक गतिविधियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिससे राज्य में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की व्यापक परंपरा और उसके महत्व को समझा जा सके।कर्नाटक में हिन्दी सेवी संस्थाओं का योगदान

कर्नाटक में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का श्रेय अनेक हिन्दी सेवी संस्थाओं को जाता है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के अतिरिक्त कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, रियासत हिन्दी सेवा समिति तथा कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति जैसी संस्थाओं ने हिन्दी शिक्षण और प्रचार का व्यापक कार्य किया।

इन संस्थाओं ने हिन्दी शिक्षण केंद्रों की स्थापना, पाठ्य सामग्री का प्रकाशन, परीक्षाओं का संचालन तथा हिन्दी शिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्य किया। हजारों विद्यार्थियों और हिन्दी प्रेमियों को इन संस्थाओं ने हिन्दी सीखने और हिन्दी साहित्य से जुड़ने का अवसर प्रदान किया।

महात्मा गांधी की प्रेरणा से स्थापित कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति ने विशेष रूप से महिलाओं में हिन्दी जागरण का कार्य किया। वर्ष 1953 में स्थापित इस संस्था ने राष्ट्रीय एकता तथा महिला शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। डॉ. पी. आर. श्रीनिवास शास्त्री के नेतृत्व में इस संस्था ने महिलाओं को हिन्दी शिक्षा से जोड़कर सामाजिक जागरूकता का नया आयाम प्रस्तुत किया।

इसी प्रकार 1935 में स्थापित अखिल कर्नाटक प्रांतीय हिन्दी प्रचार सभा ने कर्नाटक में हिन्दी प्रचार आंदोलन को संगठित स्वरूप प्रदान किया। श्री निटूर श्रीनिवास राव, रंगराव दिवाकर, उमाबाई कुंदापुर, अण्णा साहब लट्ठ, निजलिंगप्पा तथा वीरेंद्र पाटिल जैसे अनेक हिन्दी प्रेमियों ने इस आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कर्नाटक के विश्वविद्यालयों का योगदान

कर्नाटक के विश्वविद्यालयों ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैसूर

विश्वविद्यालय और कर्नाटक विश्वविद्यालय से प्रारंभ हुआ हिन्दी अध्ययन आज राज्य के अनेक विश्वविद्यालयों तक विस्तृत हो चुका है। इन विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभागों की स्थापना के पश्चात शोध, आलोचना, तुलनात्मक अध्ययन तथा अनुवाद के क्षेत्र में व्यापक कार्य हुआ। कन्नड़ और हिन्दी साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन ने भारतीय भाषाओं के मध्य सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ किया। आज कर्नाटक के विश्वविद्यालयों से हिन्दी विषय में सैकड़ों शोधार्थी उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य कर चुके हैं।

कर्नाटक में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

कर्नाटक में हिन्दी साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रारंभिक काल में 'पूर्णबोध' जैसी पत्रिकाओं ने हिन्दी के प्रचार में योगदान दिया। इसके पश्चात 'हिन्दी प्रचारक', 'हिन्दी प्रचार समाचार', 'भारतवाणी', 'परिषद पत्रिका', 'हिन्दी प्रचारवाणी' आदि पत्रिकाओं ने हिन्दी साहित्य और भाषा के प्रचार को नई दिशा प्रदान की। इन पत्र-पत्रिकाओं ने साहित्यिक रचनाओं, आलोचनात्मक लेखों, अनुवादों और शोध आलेखों को मंच प्रदान किया। वर्तमान समय में भी 'सृजन' जैसी पत्रिकाएँ हिन्दी साहित्य की सेवा में निरंतर सक्रिय हैं। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कर्नाटक के हिन्दी लेखकों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त हुई है।

कर्नाटक के हिन्दी साहित्यकार

कर्नाटक के अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। इंदिरादेवी, हिरण्यमय, आर.एन. मोहन, बादामी राधाकृष्ण, पंचाक्षरी हिरेमठ, एन.एस. दक्षिणामूर्ति, एम.एस. कृष्णमूर्ति, चंद्रकांत कुसनूर तथा अप्पासाहेब सिनदी जैसे साहित्यकारों ने कविता, कहानी, आलोचना, नाटक और अनुवाद जैसी विविध विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।इन साहित्यकारों की रचनाओं में कर्नाटक की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक यथार्थ तथा भारतीयता की भावना का समन्वय दिखाई देता है।

उपसंहार

कर्नाटक में हिन्दी का विकास ऐतिहासिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रयासों का परिणाम है। दक्खिनी परंपरा से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयीय शिक्षा तक हिन्दी ने कर्नाटक में निरंतर प्रगति की है। हिन्दी प्रचार संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, साहित्यकारों तथा पत्र-पत्रिकाओं ने मिलकर हिन्दी को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कर्नाटक का हिन्दी योगदान केवल क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य और

शोध जगत को भी समृद्ध करता है। वर्तमान समय में भारतीय भाषाओं के समन्वय और राष्ट्रीय एकता के परिप्रेक्ष्य में कर्नाटक का हिन्दी प्रचार आंदोलन एक आदर्श उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

संदर्भ सूची

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा. दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का इतिहास. चेन्नई।

कर्नाटक हिन्दी प्रचार सभा. वार्षिक प्रतिवेदन एवं स्मारिका।

कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़. हिन्दी विभाग के शोध प्रबंध एवं प्रकाशन।

मैसूर विश्वविद्यालय. हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान संबंधी दस्तावेज।

REFERENCES

Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha. *History of the Promotion of Hindi in South India.* Chennai.

Karnataka Hindi Prachar Sabha. *Annual Reports and Souvenirs.*

Karnatak University, Dharwad. *Research Theses and Publications of the Department of Hindi.*

University of Mysore. *Documents Related to Hindi Studies and Research.*